

डॉ. गैरी येट्स, जेरेमिया, व्याख्यान 21, जेरेमिया 34-35, राष्ट्र के लिए मृत्यु और शेष के लिए जीवन

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह यिर्मयाह की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. गैरी येट्स हैं। यह सत्र 21 है, राष्ट्र की मृत्यु और अवशेष को जीवन, यिर्मयाह 34-35।

हम यिर्मयाह 26 से 45, यिर्मयाह की पुस्तक के दूसरे खंड को देख रहे हैं और यह कैसे उन तरीकों और विभिन्न प्रतिक्रियाओं की कहानी है जो लोगों के पास मंत्रालय और यिर्मयाह के उपदेश के लिए थे।

इससे जो धर्मशास्त्रीय संदेश निकलता है वह यह है कि परमेश्वर ने यहूदा के लोगों पर फैसला सुनाया, यरूशलेम पर निर्वासन का फैसला सुनाया क्योंकि लोगों ने उनकी बात नहीं मानी। उन्होंने यहोवा के उस वचन का पालन नहीं किया जो यिर्मयाह के द्वारा उन से कहा गया था। पूरी किताब में, हम ऐसे कथन देखेंगे जैसे प्रभु ने बार-बार और बार-बार अपने पैगम्बरों को भेजा है, लेकिन लोगों ने उनकी बात नहीं सुनी और उनका पालन नहीं किया।

इसका दस्तावेजी प्रमाण हमें अध्याय 26 से 45 में यिर्मयाह के मंत्रालय की कहानी में मिलता है। इसके साथ ही, यरूशलेम के वास्तविक पतन की कहानी जो यिर्मयाह के मंत्रालय को मान्य करती है, जो साबित करती है कि फैसले की उसकी चेतावनियाँ कुछ ऐसी थीं जिन्हें लोगों को लेना चाहिए था गंभीरता से। और यह पुष्टि करता है कि वह ईश्वर का सच्चा पैगम्बर है।

हमने इस खंड की संरचना को भी देखा है और यहोयाकीम के अंशों, अध्याय 26 से 35, यहोयाकीम की कहानी और 26 और 35 में एक प्रकरण के माध्यम से इस खंड के चारों ओर एक रूपरेखा देखी है जो पहले पैनल को चिह्नित करती है। एक दूसरा पैनल है, 36 और 45, जहाँ फिर से, हमारे पास यहोयाकीम की कथाएँ या प्रकरण हैं और दोनों खंड यह दस्तावेज करने जा रहे हैं कि यहूदा ने आज्ञा नहीं मानी और परमेश्वर के वचन को नहीं सुना। उन्होंने न्याय से बचने का अवसर खो दिया।

हमारे पिछले भाग में, हमने दोनों भागों में रूपरेखा की शुरुआत में कहानियों को देखा। मंदिर में उपदेश दिए जाने के बाद यहोयाकीम की अवज्ञा, साथ ही यहोयाकीम द्वारा प्रभु के वचन को अस्वीकार करना, अध्याय 36, यहोयाकीम द्वारा यिर्मयाह की भविष्यवाणियों की पुस्तक को नष्ट करना।

तो, इनमें से प्रत्येक पैनल की शुरुआत में, संभावना है, शायद लोग प्रतिक्रिया देंगे। वे अपनी बुराई से फिर जायेंगे और परमेश्वर उन पर फिर वह विपत्ति नहीं डालेगा जिसके लाने की उसने धमकी दी है। ये दोनों उस संभावना को बढ़ाते हैं, 26.3 और 36.3। शायद, हमारे पास उलाई शब्द है, और यदि वे पश्चाताप करेंगे तो प्रभु नरम पड़ने की इच्छा व्यक्त कर रहे हैं।

ये दोनों खंड, 26 से 35 और 36 से 45, जो दिखाने जा रहे हैं, वह निर्णय से बचने के उन अवसरों को बंद करना है। यहूदा में यहोयाकीम के शासनकाल का समय एक ऐतिहासिक क्षण था। इस फैसले से बचने का मौका अब भी है।

भगवान ने लोगों को बार-बार अवसर दिए हैं, लेकिन एक आखिरी मौका है। और फिर जब यहोयाकीम और लोग प्रभु के वचन को अस्वीकार करते हैं, और यह यरूशलेम के पतन के समय तक जारी रहता है, तो वह निर्णय जो यिर्मयाह के मंत्रालय की शुरुआत में संभव है, जिसके बारे में भविष्यवक्ता चेतावनी दे रहा है, जैसे-जैसे हम करीब आते हैं, अपरिवर्तनीय हो जाता है। यरूशलेम के पतन का समय. दोनों पैनलों के अंत में हमारे पास बड़े पैमाने पर राष्ट्र पर फैसले का एक बयान है, इस तथ्य के कारण कि उन्होंने प्रभु के वचन को स्वीकार नहीं किया।

प्रत्येक पैनल की शुरुआत में जीवन और मृत्यु की संभावना की पेशकश की गई है। अंतिम प्रतिक्रिया यह है कि वे शब्द को अस्वीकार कर देंगे, और यह मृत्यु लाता है। हम यिर्मयाह अध्याय 35 में देखते हैं, कि परमेश्वर यरूशलेम के अंतिम दिनों में और एक राष्ट्र के रूप में यहूदा के अंतिम दिनों में उस देश में बचे हुए लोगों के खिलाफ जो न्याय अभी भी यहूदा में हैं, उनके खिलाफ लाने जा रहा है।

हम यह भी देखते हैं कि यिर्मयाह 44 में एक ऐसा न्याय है जो पूरे लोगों को अपने में समाहित करता है। और यह न्याय मिस्र में रहने वाले यहूदी शरणार्थियों पर है। वे भी प्रभु के वचन को अस्वीकार करते हैं।

तो, शायद शुरुआत में वे जवाब दें। शायद वे हर पैनल के अंत में पछताएँ। नहीं, ऐसा नहीं होने वाला है।

परमेश्वर के वचन को सुनना जीवन और मृत्यु का मामला है। मूसा ने अपने समय में लोगों से कहा था, अपने लिए जीवन या मृत्यु में से एक चुन लो। परमेश्वर के वचन का पालन करने से जीवन मिलेगा।

मृत्यु और शाप उन लोगों से आएंगे जो उसकी आज्ञाओं का उल्लंघन करना चुनते हैं। और हम देखते हैं कि यह यिर्मयाह के जीवन, सेवकाई और उपदेश में खुद ही काम करता है। लेकिन अध्याय 44 में इनमें से प्रत्येक पैनल को बंद करने वाले अंतिम अध्यायों में, या अध्याय 34 और 35 में पहले खंड में, और फिर अध्याय 44 और 45 में दूसरे खंड में, हम पाते हैं कि ऐसे व्यक्तियों या समूहों के सीमित उदाहरण हैं जिन्होंने परमेश्वर के वचन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की, और वे न्याय से बच जाएंगे।

वे जीवन के उपहार और पुरस्कार का अनुभव करने जा रहे हैं क्योंकि वे परमेश्वर की बात सुनते हैं। इसलिए, कुल मिलाकर, यिर्मयाह के मंत्रालय को देखना वास्तव में निराशाजनक बात है। संभावना है कि अगर लोग नरम पड़ जाएं, तो उन्हें बख्श दिया जाएगा।

समग्र रूप से राष्ट्र उस अवसर को अस्वीकार करता है, लेकिन कुछ अवशेष हैं जो प्रतिक्रिया देंगे, और वे भगवान की आज्ञा मानने से मिलने वाले आशीर्वाद का अनुभव करेंगे। तो, इनमें से प्रत्येक पैनल के अंत में हमारे पास जो है वह यह है कि राष्ट्र की मृत्यु और प्रमुख व्यक्तियों के उद्धार के बीच एक विरोधाभास है जो भगवान या उसके वचन के प्रति सकारात्मक तरीके से प्रतिक्रिया करते हैं। पहले पैनल में, रेचाबाइट्स नामक लोगों के एक समूह को सकारात्मक प्रतिक्रिया और जीवन और मुक्ति का वादा दिया जाएगा।

और वह लोगों का एक समूह या एक नाम हो सकता है जिससे आप पूरी तरह से अपरिचित हैं। वे एक बहुत ही अस्पष्ट समूह हैं, लेकिन उन्हें पूरे देश पर आने वाले फैसले के विपरीत जीवन का वादा किया गया है। दूसरे पैनल में, हमारे पास मिस्र में शरणार्थियों का निर्णय है।

वे अपने मूर्तिपूजक तरीकों को जारी रखेंगे। भगवान उन्हें नहीं छोड़ेंगे, लेकिन हमारे पास एक व्यक्ति, विश्वासयोग्य सदस्य का उद्धार भी है, और उसका नाम बारूक है, जो यिर्मयाह का मुंशी है। तो, इस सब में त्रासदी यह है कि ऐसी संभावना है कि संपूर्ण राष्ट्र जीवन और आशीर्वाद का अनुभव कर सकता है।

वास्तविकता तो यह है कि केवल कुछ ही अल्पसंख्यक लोग वास्तव में सकारात्मक तरीके से प्रतिक्रिया देंगे और वे ही मोक्ष के आशीर्वाद का अनुभव करेंगे। पूरे इज़राइल के इतिहास में, हमारा यह विचार है कि हमारे पास एक लोग हैं, और अलग-अलग डिग्री तक, बड़े पैमाने पर लोग भगवान के प्रति अवज्ञाकारी प्रतीत होते हैं। वे कठोर गर्दन वाले हैं, वे विद्रोही हैं, और कठोर दिल वाले हैं, लेकिन इज़राइल और यहूदा के इतिहास में चाहे कितनी भी बुरी चीजें क्यों न हों, हमेशा एक वफादार अवशेष होता है।

उत्तरी राज्य में अहाब के धर्मत्याग के दिनों में, जब उसकी पत्नी इज़ेबेल ने लोगों को बाल की पूजा में भटका दिया था, इज़राइल में अभी भी वफादार भविष्यवक्ता हैं और अभी भी भगवान के वफादार सेवक हैं। अहाब के पास उसका एक अधिकारी ओबद्याह भी है, जो प्रभु का एक वफादार, समर्पित, निष्ठावान अनुयायी है। और यहूदा के अंतिम दिनों में, संपूर्ण राष्ट्र परमेश्वर से दूर हो गया है।

यिर्मयाह अध्याय पाँच में, प्रभु कल्पना करते हैं कि कोई यरूशलेम शहर से गुजर रहा है और एक धर्मी व्यक्ति को खोजने की कोशिश कर रहा है, लेकिन उन्हें एक भी धर्मी व्यक्ति नहीं मिल रहा है। यहूदा और यरूशलेम सदोम और अमोरा से भी अधिक दुष्ट हो गए हैं। लेकिन राष्ट्रीय धर्मत्याग के इस समय में भी, जहां ईश्वर उस बिंदु पर पहुंच गया है जहां वह कहता है, मैं न्याय लाने जा रहा हूँ, वहां अभी भी कुछ वफादार व्यक्ति हैं।

अब, पहले पैनल में या अध्याय 35 में, इस के अंत में जिस समूह को उद्धार और मुक्ति का वादा किया गया है, वह रेकाबी समूह है। ठीक है, मैं यिर्मयाह 35 की शुरुआती आयतें पढ़ता हूँ, और हम रेकाबी लोगों के बारे में बात करेंगे और वे कौन हैं, वे इस कहानी में क्यों हैं, और वे क्यों महत्वपूर्ण हैं।

अध्याय 35, आयत एक में यह कहा गया है, जो वचन योशियाह के पुत्र यहोयाकीम के दिनों में यहोवा की ओर से यिर्मयाह के पास आया था।

तो, हम यहोयाकीम के समय में वापस आ गए हैं। यह पहले भाग में फ्रेम का निष्कर्ष है। रेकाबियों के घराने में जाओ और उनसे बात करो और उन्हें यहोवा के भवन के एक कमरे में ले आओ, फिर उन्हें पीने के लिए शराब दो।

इसलिए, मैंने हबज्जिन्याह के पुत्र यिर्मयाह के पुत्र याजनै और उसके भाइयों और सभी पुत्रों और रेकाबियों के पूरे घराने को लिया, और मैंने उनमें से कुछ नामों को वहाँ बलि कर दिया। मैं उन्हें यहोवा के भवन में, परमेश्वर के जन, यिग्दल्याह के पुत्र हनान के पुत्रों के कक्ष में ले आया, जो पवित्रस्थान में इन अन्य नेताओं के कक्ष के ऊपर, अधिकारियों के कक्ष के पास था। और यह पाँचवीं आयत में कहा गया है, फिर मैंने रेकाबियों के सामने चित्र रखे, शराब से भरे घड़े और प्याले।

मैंने उनसे कहा, "शराब पीओ।" उन्होंने कहा, "हम शराब नहीं पीएँगे, क्योंकि रेकाब के बेटे योनादाब ने हमारे पिता से कहा है कि तुम और तुम्हारे बेटे कभी शराब नहीं पीएँगे। तुम घर नहीं बनाना।"

तुम बीज नहीं बोओगे। तुम न तो पौधे लगाओगे और न ही अंगूर का बाग लगाओगे, बल्कि तुम अपने जीवन भर तम्बुओं में रहोगे ताकि तुम उस देश में बहुत दिन तक रह सको जहाँ तुम परदेशी हो। हमने अपने पिता योनादाब, रेकाब के पुत्र की बात मानी है, उसने हमें आज्ञा दी थी कि हम अपने जीवन भर न तो दाखमधु पीएँगे, न ही अपनी पत्नियाँ, न बेटे, न बेटियाँ, और न ही रहने के लिए घर बनाएँगे।

हमारे पास न तो कोई दाख की बारी है, न कोई खेत, न ही कोई बीज, लेकिन हम तम्बुओं में रहते हैं और जो कुछ हमारे पिता योनादाब ने हमें आज्ञा दी थी, उसका पालन करते हैं। लेकिन जब बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने देश पर आक्रमण किया, तो हमने कहा, चलो हम कसदियों और अरामियों की सेना के डर से यरूशलेम चले जाएँ। इसलिए, हम यरूशलेम में रहते हैं।

ठीक है। यहाँ दुनिया में क्या चल रहा है? या बड़ा सवाल जो आप पूछ रहे होंगे, तो क्या? ठीक है। रेकाबियों का एक खानाबदोश कबीला था जो यहूदा में रहता था, और वे उस प्रतिज्ञा के प्रति वफादार थे जो उनके पूर्वज योनादाब ने 200 साल पहले येहू के दिनों में ली थी।

और उनके पूर्वज योनादाब ने जो किया वह यह है कि उस समय जब उत्तरी राज्य में इस्राएल यहोवा के प्रति विश्वासघाती था, और वे बाल और अहाब की पूजा करते थे और ईजेबेल ने इसे बढ़ावा दिया था, राजा येहू शुद्ध करने के लिए आए थे इस धर्मत्याग का इजराइल। खैर, योनादाब, जो रेकाबियों का पूर्वज था, येहू के सुधारों का मित्र और समर्थक था। और जैसा कि योनादाब ने भ्रष्टाचार को देखा और कैसे, मुझे लगता है कि कई मायनों में, कनानी प्रभाव ने इस्राएल के लोगों को प्रभु से दूर कर दिया था।

उन्होंने एक शपथ ली कि उन्हें उम्मीद है कि, मुझे लगता है, किसी तरह से, वे अपने परिवार को बचाएंगे और उन्हें प्रभु के प्रति वफादार बनाए रखेंगे। और उनकी शपथ में तीन खास बातें शामिल थीं। वे फसल नहीं उगाएंगे।

वे घरों में नहीं रहेंगे। इसके बजाय, वे तंबुओं में रहेंगे, और वे शराब नहीं पीएंगे। ठीक है।

मुझे लगता है, फिर से, इस सब का उद्देश्य, किसी तरह से, अपने परिवार को इस्राएली समाज के भ्रष्टाचार से अलग रखना था। और मुझे लगता है कि अहाब और इज़ेबेल द्वारा बाल की पूजा को बढ़ावा देने के परिणामस्वरूप कनानी प्रभाव आया था। और इसलिए, यह सब येहू के सुधारों के समय में हुआ।

आप इसके बारे में 2 राजा अध्याय 10, श्लोक 15 से 17 में पढ़ सकते हैं। रेकाबियों के इस पूर्वज का उल्लेख उस विशेष अंश में किया गया है। ठीक है।

अब, क्या घरों में रहना, फसल उगाना और शराब पीना कोई अधार्मिक बात थी? खैर, वास्तव में, ये वे चीज़ें थीं जिनका वादा परमेश्वर ने इस्राएल से वादा किए गए देश में रहने के लिए आशीर्वाद के रूप में किया था। व्यवस्थाविवरण अध्याय 6, श्लोक 10 और 11 में, मैं तुम्हें ऐसे घर देने जा रहा हूँ जिन्हें तुमने नहीं बनाया। मैं तुम्हें अंगूर के बाग देने जा रहा हूँ जिन्हें तुमने नहीं लगाया।

और मैं तुम्हें भूमि में होने वाली सभी फसलों की प्रचुरता से आशीर्वाद देने जा रहा हूँ। इसलिए, एक अर्थ में, योनादाब एक ऐसी शपथ ले रहा था जिसने वास्तव में उसके परिवार को उन विशिष्ट वाचा संबंधी वादों से वंचित कर दिया था जो परमेश्वर ने पूरे इस्राएल के लोगों को दिए थे। लेकिन फिर से, यह परमेश्वर के प्रति एक स्वैच्छिक शपथ थी जो मुझे लगता है कि कुछ अर्थों में, फिर से, अपने परिवार को प्रभु के प्रति वफादार रखने का एक प्रयास था।

अब, कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि 200 साल बाद, जब हम यिर्मयाह के दिन तक पहुंचेंगे, रेकाबाइट्स बस एक परिवार हो सकते हैं, या यह वास्तव में लोगों का एक समूह हो सकता है जो एक साथ बंधे हुए हैं। वे धातु श्रमिक हो सकते हैं। शब्द, रेकाबाइट्स, रथ के लिए शब्द रकाब है।

कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि वे रथों के निर्माता थे। तो हो सकता है कि यह एक संघ हो, लेकिन इस व्रत के कारण उन्होंने एक तरह से खुद को समाज से अलग रखा है। ठीक है।

फिर, ईश्वर द्वारा ऐसा कुछ भी आदेश नहीं दिया गया था जिसमें विशेष रूप से कहा गया हो, कि आपको ये तीन चीज़ें नहीं करनी हैं। वास्तव में, फिर से, यह भगवान द्वारा दिया गया एक आशीर्वाद था, और उन्होंने स्वेच्छा से खुद को इन चीज़ों से वंचित कर दिया है, और इसके परिणामस्वरूप वे एक अलग पहचाने जाने योग्य समूह बन गए हैं। एक प्राचीन समानता को देखते हुए, हम उनकी तुलना नाज़ारियों से कर सकते हैं।

और याद रखें कि नाज़ीर की प्रतिज्ञा, गिनती अध्याय छह, आयत दो से चार में तीन बातें शामिल थीं। जब व्यक्ति प्रतिज्ञा लेता था, तो वह अपने बाल नहीं कटवाता था। वह शराब नहीं पीता था या

वास्तव में, किसी भी तरह का अंगूर का उत्पाद नहीं खाता था, और वह किसी मृत शरीर के संपर्क में नहीं आता था।

अब, सैमसन जैसे चरम उदाहरणों को छोड़कर, सामान्य रूप से नाज़ीर होने के नाते, यह केवल कुछ ऐसा था जो आप ईश्वर के प्रति अपनी भक्ति व्यक्त करने के लिए थोड़े समय के लिए करते थे, शायद किसी ज़रूरी काम के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने के लिए। लेकिन रेचैबियों ने भी स्वैच्छिक प्रतिज्ञा ली थी। और यह कुछ ऐसा था जिसे सिर्फ योना ने नहीं अपनाया था, बल्कि उन्होंने वास्तव में इसे 200 सालों तक जारी रखा था।

ठीक है। तो, यहाँ यह परिवार है, यहाँ यह कबीला है, या शायद एक समूह या एक गिल्ड है जो एक साथ बंधे हुए हैं। एक समकालीन उदाहरण को देखते हुए, हम उनकी तुलना अमेरिका में अमिश से कर सकते हैं।

वे इज़राइली अमीश की तरह हैं। वे एक बहुत ही पहचाने जाने योग्य समूह हैं जिन्होंने कुछ अर्थों में इन तीन विशिष्ट चीजों से खुद को समाज से अलग कर लिया है। लेकिन यह हमें बताता है कि वे अंतिम दिनों में यरूशलेम में रह रहे हैं क्योंकि बेबीलोन की सेना के दबाव ने उन्हें शहर की दीवारों के भीतर आने के लिए मजबूर कर दिया है।

यिर्मयाह उन्हें मन्दिर में लाता है। और वह न केवल उन्हें मन्दिर में लाता है, वह उनके सामने शराब के घड़े और कुप्पियाँ रखता है, और उन्हें पीने के लिए कहता है। और शायद हम इसे चित्रित कर सकते हैं और यिर्मयाह के सारांश में से एक के रूप में इसकी कल्पना कर सकते हैं।

लेकिन यहां यह एक तरह की विडंबनापूर्ण लगती है। यह परिवार 200 वर्षों से अपनी प्रतिज्ञा के प्रति वफादार है, और यिर्मयाह उन्हें मंदिर में इसे तोड़ने के लिए कह रहा है। ठीक है।

इसलिए, 26 और 36 में, यिर्मयाह ने मंदिर में परमेश्वर के लोगों को कुछ महत्वपूर्ण संदेश दिए, और लोगों ने उनकी बात नहीं सुनी। इसलिए अब, यिर्मयाह रेकाबियों को मंदिर में लाता है और उन्हें शराब पीने के लिए कहता है। अरे, अपने परिवार की उस प्रथा को रद्द करो जो 200 सालों से चली आ रही है।

और ऐसा लगता है, यिर्मयाह यहाँ क्या कर रहा है? आमोस अध्याय 2, आयत 12 में कहा गया है कि इस्राएलियों के पापों में से एक यह है कि उन्होंने नाज़रियों को शराब पिलाई। और उन्होंने इन लोगों को जो परमेश्वर के प्रति अपनी भक्ति व्यक्त कर रहे थे, कुछ ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया जिससे उनकी प्रतिज्ञा टूट गई। एक अर्थ में, ऐसा लगता है कि यिर्मयाह भी यही कर रहा है।

शराब पी लो। लेकिन जब यिर्मयाह रेकाबियों से ऐसा करने के लिए कहता है तो आश्चर्यजनक बात यह होती है कि वे नबी द्वारा बताई गई बात को मानने से इनकार कर देते हैं। ठीक है।

अब, यह काफी हद तक यहूदा के लोगों जैसा लगता है। यहूदा के राजा और यहूदा के लोगों ने मन्दिर में यहोवा का वचन सुनने से इन्कार किया है। लेकिन विडम्बना यह है कि परमेश्वर रेकाबियों को आशीर्वाद देता है क्योंकि वे वह नहीं करते जो भविष्यवक्ता उनसे कहता है।

ठीक है। अब, इसका मुद्दा यह है कि इस सब में एक बहुत शक्तिशाली वस्तु सबक है। यिर्मयाह और यहोवा चाहते हैं कि लोग कुछ समझें।

यदि रेकाबी लोग उस पारिवारिक परंपरा के प्रति इतने ही निष्ठावान और विश्वासयोग्य रहे हैं जिसकी आज्ञा सीधे तौर पर परमेश्वर ने नहीं दी थी, तो फिर यहूदा के लोगों ने यहोवा के उन शब्दों को क्यों नहीं सुना जिनकी आज्ञा स्वयं परमेश्वर ने उन्हें दी थी? ठीक है। रेकाबाइट्स मानव परंपरा के प्रति वफादार रहे हैं। और एक मायने में, यह सराहनीय है।

मेरा मानना है कि इसने उन्हें किसी तरह से ईश्वर के प्रति वफादार रहने में मदद करने में वास्तविक भूमिका निभाई है। यह सराहनीय है, लेकिन यह उनके पिता की शिक्षा है।' यह मनुष्य की परंपरा है।

यहूदा ने जो बात नहीं सुनी वह यहोवा का वचन है। और इसलिए, भले ही ये लोग वास्तव में भविष्यवक्ता की अवज्ञा करते हैं और वह नहीं करते जो भविष्यवक्ता उन्हें बताता है, प्रभु अंततः उन्हें आशीर्वाद देते हैं और उनके पिता की परंपराओं के प्रति उनकी वफादारी के लिए उन्हें पुरस्कृत करते हैं। तो, यहाँ वह संदेश है जो रेकाबाइट्स की इस कहानी से निकलता है।

यहाँ भविष्यवक्ता क्या कहता है; यहाँ प्रभु लोगों से क्या कहना चाहते हैं। यहोवा ने यिर्मयाह को यहूदा के लोगों के पास जाने का निर्देश दिया और यह कहा। पद 14, रहोब के पुत्र योनादाब ने अपने पुत्रों को दाखमधु न पीने की जो आज्ञा दी या, वह मानी गई है, और वे आज तक नहीं पीते, क्योंकि उन्होंने उसका पालन किया है।

शम्माह, उन्होंने अपने पिता की आज्ञा मानी है। विडंबना यह है कि इस्राएल के लोगों ने यहोवा की बात नहीं मानी है। उन्होंने अपने पिता की आज्ञा मानी है, और मैंने तुमसे लगातार बात की है, लेकिन तुमने मेरी बात नहीं मानी है।

मैंने अपने सभी सेवकों, भविष्यवक्ताओं को तुम्हारे पास यह कहते हुए भेजा है, कि तुम में से हर एक अपने बुरे मार्ग से फिरो और अपने कामों को सुधारो और दूसरे देवताओं के पीछे जाकर उनकी सेवा मत करो। और तब तुम उस देश में बसोगे जिसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिया था, लेकिन तुमने मेरी बात सुनने के लिए अपना कान नहीं लगाया। याद रखो, रेकाबियों ने 200 वर्षों तक अपने पिता की प्रतिज्ञा का पालन किया है।

लेकिन यहोवा सैकड़ों सालों से इस्राएल और यहूदा के साथ व्यवहार कर रहा है, और उन्होंने लगातार परमेश्वर की अवज्ञा की है। उन्होंने लगातार भविष्यवक्ताओं की बात नहीं सुनी है। और इसलिए देखो, मैं यहूदा और यरूशलेम के सभी निवासियों पर वह सारी विपत्ति ला रहा हूँ, जो मैंने उनके विरुद्ध घोषित की है।

ठीक है? तो, यहाँ उन लोगों का संदर्भ है जिन्होंने परमेश्वर की बात नहीं सुनी है। इसके परिणामस्वरूप, एक राष्ट्रीय न्याय होने जा रहा है जो उन सभी लोगों पर पड़ने जा रहा है जो अभी

भी देश में बचे हुए हैं। और प्रभु निर्वासन की ये विभिन्न लहरें लाने जा रहे हैं और परमेश्वर राष्ट्र का न्याय करने जा रहे हैं।

क्यों? क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की बात नहीं मानी। लेकिन परमेश्वर रेकाबियों को आशीर्वाद देगा क्योंकि उन्होंने अपने पिता की बात मानी। और इसलिए, जैसा कि हम 26 से 35 में पैनल को देखते हैं, अध्याय 26 की शुरुआत में पूरे राष्ट्र के न्याय से बचने की संभावना है।

हालाँकि, अध्याय 35 में पैनल के अंत में, आपने नहीं सुना है, आपने आज्ञा का पालन नहीं किया है, आपने यिर्मयाह को ठीक उसी तरह से जवाब दिया है जैसे आपने अन्य भविष्यवक्ताओं को जवाब दिया था। इसलिए, मैं इन लोगों पर विपत्ति ला रहा हूँ। परन्तु उस प्रतिज्ञा को सुनो जो रेकाबियों को दी गई है।

परन्तु रेकाबियों के घराने से यिर्मयाह ने कहा, सेनाओं का यहोवा यों कहता है, क्योंकि तुम ने अपने पिता योनादाब की आज्ञा मानी है, और उसके सब उपदेशोंको माना है, और जो कुछ उस ने तुम को आज्ञा दी या, वह सब तुम ने किया है। इस कारण सेनाओं का यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर यों कहता है, राचेब के पुत्र योनादाब को मेरे साम्हने खड़े रहनेवाले की घटी न होगी। अब, यह कोई वादा नहीं है कि वे इसे हमेशा के लिए सहने वाले हैं, बल्कि यह एक वादा है कि जब तक यह कबीला अस्तित्व में है, उनके पास भगवान के सामने उनका प्रतिनिधित्व करने के लिए कोई होगा।

ठीक है, तो पूरे राष्ट्र के लिए मृत्यु है, और इस छोटे से समूह के लिए जीवन है। यिर्मयाह के मंत्रालय की शुरुआत में संभावना है कि यह पूरा राष्ट्र, कि पूरा राष्ट्र जीवन का अनुभव कर सकता है यदि वे केवल परमेश्वर की ओर मुड़ें और उसका जवाब दें और उसकी आज्ञा का पालन करें। इस चक्र के अंत में, यहाँ निराशा है क्योंकि एकमात्र समूह जो इस न्याय से बचने वाला है, वह रेकाबियों का है।

अब, मुझे लगता है कि यहां कुछ बहुत प्रभावी अलंकारिक उपकरण चल रहे हैं। ऐसे कुछ कारण हैं कि यहां रेकाबाइट्स का उपयोग उस संदेश को व्यक्त करने का एक विशेष रूप से प्रभावी तरीका है जो भगवान समग्र रूप से लोगों को देना चाहते हैं। सबसे पहले, केवल तथ्य यह है कि भगवान को इस अस्पष्ट जनजाति, रेकाबियों, जो वास्तव में यरूशलेम के नागरिक और निवासी भी नहीं हैं, का उपयोग करना है, शुरुआत के लिए, तथ्य यह है कि उन्हें उन्हें आज्ञाकारिता के अपने उदाहरण के रूप में उपयोग करना है, मैं इसका मतलब है, यिर्मयाह को किसी ऐसे व्यक्ति को खोजने के लिए काफी समय और कड़ी मेहनत करनी पड़ी जो वफादार हो।

ठीक है, दूसरी बात जो विडंबनापूर्ण है, और फिर से, हमने पहले ही इसका उल्लेख किया है, वह यह है कि रेकाबियों ने एक ऐसी जीवनशैली अपनाई जिसने उन्हें वाचा के सभी आशीर्वादों, घरों, दाख की बारियों, फसलों, उन उत्पादों का पूरी तरह से आनंद लेने की अनुमति नहीं दी जो प्रभु उन्हें देंगे। वास्तव में, उन्हें शायद अपने शिल्प का काम करके, भोजन के लिए उसका व्यापार करना पड़ा क्योंकि उन्होंने खुद फसलें नहीं उगाईं। उन्हें दाख की बारियों और शराब और घरों

और उन सभी चीजों का आनंद नहीं मिला जो परमेश्वर ने इन लोगों के लिए तैयार की थीं, और फिर भी वे ही हैं जो बच गए हैं और आशीर्वाद का अनुभव करने जा रहे हैं।

लेकिन यह एक बहुत ही सीमित प्रकार का आशीर्वाद है क्योंकि वे एक ऐसा जीवन जीते हैं जो उन्हें दूध और शहद से बहने वाली भूमि का पूरी तरह से आनंद लेने की अनुमति नहीं देता है। यहाँ तीसरी विडंबना यह है कि यह मार्ग वास्तव में हमें रेकाबियों की धर्मपरायणता या उनकी भक्ति या ईश्वर के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के बारे में सीधे तौर पर कुछ नहीं बताता है। अब, हम मानते हैं कि इसके पीछे उद्देश्य, योना, उनके पास शुरू में इस व्रत का कारण है: मेरे लोग, मेरे वंशज, फसल नहीं उगाएँगे, घरों में नहीं रहेंगे और शराब नहीं पीएँगे।

यह उन्हें अपने आस-पास के समाज के भ्रष्टाचार से अलग रखने का एक तरीका था। हम मानते हैं कि रेकाबियों ने इसे परमेश्वर के प्रति अपनी भक्ति के हिस्से के रूप में जारी रखा है, लेकिन भगवान के प्रति उनके प्रेम या परमेश्वर के प्रति उनकी भक्ति के बारे में विशेष रूप से कुछ नहीं कहा गया है। और वे उस आज्ञा का भी उल्लंघन करते हैं जो पैगंबर ने उन्हें शुरुआत में दी थी, शराब पीना।

तो, यह लगभग वैसा ही है जैसे वे भविष्यवक्ता के प्रति उतने ही अनुत्तरदायी हैं, लेकिन प्रभु उन्हें पुरस्कृत करते हैं। और फिर, इस सब की अंतिम विडंबना यह है कि भगवान उन्हें अपने पिता की परंपराओं का पालन करने के लिए आशीर्वाद देते हैं। और इसके विपरीत यह है कि यदि परमेश्वर इन लोगों को आशीर्वाद देगा जिन्होंने इस स्वैच्छिक प्रतिज्ञा को रखा है, तो इस्राएल ने क्यों और यहूदा ने क्यों, क्यों परमेश्वर का वचन नहीं सुना? ठीक है।

परमेश्वर का वचन और उस पर हमारी प्रतिक्रिया जीवन और मृत्यु का मामला है। रेकाबाइट्स जीवन का अनुभव करेंगे। संपूर्ण राष्ट्र को मृत्यु का अनुभव होगा।

यह आशीर्वाद फिर से शिक्षाओं को सुनने और अपने पिता की परंपराओं पर ध्यान देने से मिलता है। तो, यहाँ कुछ दिलचस्प चीज़ें चल रही हैं। यहां अवशेष का हमारा उदाहरण है।

अवशेष कैसा दिखता है? यह रेकाबाइट्स है। यह यहूदा का अमीश है। उसे संरक्षित किया जायेगा।

अब, रेकाबियों को जो वादा दिया गया है कि उनके पास मेरे सामने खड़े होने के लिए एक आदमी की कमी नहीं होगी, वही वादा यिर्मयाह 33 में लेवियों और दाऊद के घराने को दिया गया है। अब, जब यिर्मयाह अध्याय 33 में लेवियों और दाऊद को वह वादा दिया गया है, तो इसका बहुत बड़ा राष्ट्रीय महत्व है। इसका मतलब है कि दाऊद के राजा की भूमिका, भले ही परमेश्वर वर्तमान में उनका न्याय कर रहा है, वह भूमिका और वह विशेष संबंध जो परमेश्वर का दाऊद के साथ था, जारी रहने वाला है।

परमेश्वर ने दाऊद से जो विशेष वाचा का वादा किया था कि वह अपना सिंहासन हमेशा के लिए स्थापित करेगा, वह जारी रहेगा। और यह एक राष्ट्र के रूप में इस्राएल के जीवन का केंद्र है। और यह उनकी अंतिम बहाली का केंद्र बनने जा रहा है।

जब यहोवा कहता है, लेवियों को मेरे साम्हने खड़े रहनेवाले की घटी न होगी। वह महत्वपूर्ण है। क्योंकि राष्ट्र के लिए, लेवियों की भूमिका पुजारी और मंदिर में सेवा करने वाले लोगों की थी जो भगवान के आशीर्वाद की मध्यस्थता करते थे।

परन्तु जब हम अध्याय 35 पर आते हैं, तो यह कहता है, रेकाबियों को मेरे साम्हने खड़े होनेवाले की घटी न होगी; जनजाति के लिए इसका बहुत महत्व है, लेकिन राष्ट्र के लिए इसका कोई खास मतलब नहीं है। तो, यह सब रेकाबियों का चित्रण इस रूप में करता है कि वे वफादार उदाहरण हैं, जो इस खंड में एकमात्र और ऐसे लोग हैं जिन्होंने जीवन के आशीर्वाद का अनुभव किया है। यह समग्र रूप से यहूदा राष्ट्र की अविश्वसनीय निंदा है।

और रेकाबियों की वफादारी के उदाहरण के साथ-साथ यहूदा की राष्ट्रीय अवज्ञा भी रखी गई है। जब हम अध्याय 34 में वापस जाते हैं और यहूदा के इतिहास के अंत में होने वाली अवज्ञा का एक विशिष्ट कार्य देखते हैं, और फिर से, सिदकिय्याह की समय-सीमा और यहोयाकीम की समय-सीमा को अक्सर एक साथ रखा जाता है।

लेकिन यहाँ अध्याय 34 में वह घटना है जो अध्याय 35 में सुनाए गए राष्ट्रीय निर्णय को सामने लाती है, जो पहले पैनल को समाप्त करती है और कहती है कि लोगों के पास जीवन का अनुभव करने का मौका था, लेकिन वे इसे प्राप्त नहीं करने जा रहे हैं क्योंकि उन्होंने सही तरीके से ईश्वर को जवाब नहीं दिया। हम अध्याय 34 पर वापस जाते हैं, और अब हम यहूदा के अंतिम दिनों में हैं। यह सिदकिय्याह का समय है, बेबीलोन का आक्रमण और सेना यहाँ यहूदा पर गंभीर तरीके से दबाव डाल रही है।

श्लोक 7, अध्याय 34 में यह कहा गया है, भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने ये सभी शब्द यहूदा और यरूशलेम के राजा सिदकिय्याह से कहे थे, जब बेबीलोन के राजा की सेना यरूशलेम और यहूदा के सभी बचे हुए शहरों, लाकीश और अजेका के खिलाफ लड़ रही थी, क्योंकि ये यहूदा के बचे हुए एकमात्र किलेबंद शहर थे। इसलिए हम अध्याय 34, 7 में एक जगह देखते हैं, जहाँ यहूदा के केवल तीन किलेबंद शहर बचे हैं, लाकीश, अजेका और यरूशलेम। जब हम लाकीश पत्रों को पढ़ते हैं, जो कि उसी समय के बारे में बात करने वाले बाइबिल के अतिरिक्त स्रोत हैं, तो उन्होंने उल्लेख किया कि अजेका में संकेत आग बुझ गई है, इसलिए यह और भी बदतर होने वाला है।

यिर्मयाह 34 में आयत 8 से 22 में हालात और भी बदतर होने का कारण सीधे तौर पर ईश्वर और ईश्वर के कानून के खिलाफ अवज्ञा के प्रत्यक्ष कृत्य से जुड़ा हुआ है जो सिदकिय्याह के समय में हुआ था। ठीक है, मुझे यहाँ कुछ आयतें पढ़ने दें और फिर हम, हम जो हो रहा है उसके संदर्भ में संदर्भ सेट करेंगे। आयत 8 में, 34, 7 के ठीक बाद, केवल तीन शहर हैं, केवल तीन शहर हैं, किलेबंद शहर अभी भी खड़े हैं।

यह वचन यहोवा की ओर से यिर्मयाह के पास तब आया जब राजा सिदकिय्याह ने यरूशलेम में सब लोगों से वाचा बान्धी थी कि उनके लिये स्वतन्त्रता का प्रचार किया जाए, कि सब लोग अपने

अपने इब्री दास-दासियों को स्वतन्त्र कर दें, कि कोई अपने भाई यहूदी को दास न बनाए। और उन्होंने आज्ञा मानी।

यहाँ यहूदा के लोगों द्वारा वास्तव में कुछ ऐसा करने का एक दुर्लभ उदाहरण है जो परमेश्वर की आज्ञा का पालन करता है। ठीक है, यहाँ, यहाँ क्या हो रहा है। पुराने नियम के कानून ने इस्राएल के लोगों को निर्देश दिया था कि उन्हें अपने साथी इस्राएलियों को स्थायी रूप से गुलाम नहीं बनाना चाहिए।

अगर किसी इस्राएली को किसी दूसरे व्यक्ति से कर्ज लेने के कारण गुलाम बनना पड़ता था, तो उसे केवल छह साल तक ही गुलामी करनी पड़ती थी। लेकिन सातवें साल, निर्गमन 15 और व्यवस्थाविवरण 15 में, उस व्यक्ति को आज़ाद होने का मौका दिया जाना था। और जब आप उन्हें गुलाम के तौर पर रिहा करते हैं, तो आप वास्तव में उन्हें प्रावधान दे रहे होते हैं ताकि वे अपने नए जीवन के लिए खुद को तैयार कर सकें।

किसी भी अन्य इस्राएली को कभी भी स्थायी रूप से गुलाम नहीं बनाया जाना था। परमेश्वर ने अपने नियम में यह बात बहुत स्पष्ट रूप से बताई थी। यह अंश यह दर्शाता है कि एक लंबे समय तक यहूदा ने इस नियम का पालन नहीं किया था।

अब, कुछ विद्वानों ने तर्क दिया है कि सिदकिय्याह और लोगों ने यहां जो किया वह सीधे तौर पर इन आज्ञाओं से जुड़ा नहीं है क्योंकि सभी सेवकों को एक सामान्य माफी दी गई है। और, सिदकिय्याह बस कहता है, देखो, हम एक वाचा बनाने जा रहे हैं, और हम अपने सभी सेवकों को रिहा करने जा रहे हैं। ठीक है।

मुझे लगता है कि यह केवल इस तथ्य को दर्शाता है कि उन्हें भगवान की आज्ञा का पालन करते हुए इतना समय हो गया है कि उन्हें इस सामान्य माफी की घोषणा करनी पड़ी है। मैं अभी भी निर्गमन 15 और व्यवस्थाविवरण 15 से संबंध देखता हूँ। ठीक है।

तो ये एक सकारात्मक बात है। उन्होंने सुना और उनका पालन किया, और वे वही कर रहे हैं जो परमेश्वर के कानून ने उन्हें करने की आज्ञा दी थी। वे अपने गुलामों को रिहा कर रहे हैं।

हालाँकि, वे वास्तव में जो करने की कोशिश कर रहे हैं, वह यह है कि जैसे-जैसे बेबीलोन की सेना उन पर दबाव डाल रही है, शायद हम परमेश्वर का अनुग्रह पाने का कोई रास्ता खोज सकें। और शायद हमें परमेश्वर के वचन पर ध्यान देना चाहिए था। और अगर हम, अगर हम अपने गुलामों के साथ ऐसा दयालु व्यवहार करते हैं, और अगर हम यह सामान्य माफ़ी देते हैं, तो शायद यह संभावना है कि परमेश्वर अपना न्याय हमसे दूर कर देगा।

ठीक है। लेकिन यिर्मयाह 34:11 में यह कहा गया है, लेकिन उसके बाद, और शायद किसी कारण से, बेबीलोन की सेना पीछे हट जाती है। हम इसके बारे में किसी और तरीके से पढ़ते हैं।

हालात अब पहले जैसे मुश्किल नहीं रह गए हैं। बेबीलोन की सेना अब उन पर उतना दबाव नहीं डाल रही है, जितना तब था जब उन्होंने फरमान जारी किया था, वाचा बनाई थी और अपने गुलामों को रिहा किया था। लेकिन बाद में, वे पलट गए।

ठीक है। यह हमारा शब्द है 'शुभ'। और उन्होंने इसे वापस ले लिया।

हमारे क्रिया शब्द 'शुभ' का कारक रूप है। उन्होंने उन पुरुष और महिला दासों को वापस ले लिया जिन्हें उन्होंने मुक्त कर दिया था और उन्हें दास के रूप में वापस अपने अधीन कर लिया। इसलिए, हम इस एपिसोड की शुरुआत कुछ ऐसी चीज़ से करते हैं जो बहुत सकारात्मक लगती है।

उन्होंने अपने दासों को मुक्त करने के बारे में परमेश्वर के कानून के एक विशेष नियम का पालन किया। उन्होंने, उन्होंने, उन्होंने सुना। उन्होंने शेमा किया।

उन्होंने आज्ञा का पालन किया। उन्होंने पश्चाताप किया। उन्होंने शुभ कामनाएँ दीं।

उन्होंने अपनी दिशा बदल ली। लेकिन यह अंश जो कह रहा है वह यह है कि वे खुद को फिर से न्याय के दायरे में लाने जा रहे हैं क्योंकि जो हुआ वह यह है कि उन्होंने अपने पश्चाताप पर पश्चाताप किया। ठीक है।

यिर्मयाह की पूरी किताब में, वे ऐसे लोगों को दूर भगा रहे हैं जिन्हें वापस लौटने की ज़रूरत है। अब, आखिरकार, वे मुड़ते हैं। वे वही करते हैं, जो परमेश्वर उन्हें आज्ञा देता है और फिर वे चुप हो जाते हैं और परमेश्वर ने जो कहा है उससे दूर हो जाते हैं।

और इसके परिणामस्वरूप, वे खुद को फिर से न्याय की सजा के अधीन लाते हैं। प्रभु यह कहते हैं, आपने हाल ही में पश्चाताप किया है। ठीक है।

हमारे पास आखिरकार एक उदाहरण था जहाँ तुमने आखिरकार वही किया जो परमेश्वर ने तुम्हें करने की आज्ञा दी थी। तुमने पश्चाताप किया और वही किया जो मेरी नज़र में सही था, अपने-अपने पड़ोसियों को आज्ञादी की घोषणा करके और तुमने मेरे सामने उस घर में वाचा बाँधी जो मेरे नाम से पुकारा जाता है। तो, उन्होंने दो काम सही किए।

वे पलटे, और उन्होंने एक वाचा बाँधी। आप जानते हैं, यिर्मयाह के पूरे मंत्रालय में समस्या यह थी कि वह लोगों पर आरोप लगा रहा था कि उन्होंने वाचा तोड़ दी है। उन्होंने परमेश्वर की नज़र में जो सही है, वही करने की वाचा बाँधी।

लेकिन फिर से, आयत 16 में, उन्होंने अपने पश्चाताप से पश्चाताप किया। तब तुम पलट गए और मेरे नाम को अपवित्र किया, और तुम में से प्रत्येक ने अपने दास और दासी को वापस ले लिया जिन्हें तुमने स्वतंत्र किया था। ठीक है।

तो, पहले पैनल के अंत में, हमारे पास जो कुछ है वह यरूशलेम शहर में राष्ट्रीय अवज्ञा का एक उदाहरण है जहां सिदकिय्याह और लोग थोड़ी देर के लिए भगवान के उपदेश को ध्यान में रखते हुए उन्हें धोखा देने की कोशिश करते हैं कि उन्हें रिहा करना है उनके गुलाम. और फिर जब चीजें फिर से आसान हो जाती हैं, या जब बेबीलोन की सेना का दबाव थोड़ा कम हो जाता है, तो वे अपने गुलामों को वापस ले जाते हैं। उसके परिणामस्वरूप, राष्ट्रीय निर्णय होता है।

इसके परिणामस्वरूप, अध्याय 26 में निर्धारित निर्णय में संभावित नरमी नहीं आने वाली है। और वह राष्ट्रीय निर्णय इस अस्पष्ट जनजाति रेकाबियों की वफ़ादारी के विपरीत है, जिनके बारे में आप जानते हैं कि यह उनकी आज्ञा भी नहीं है। यह परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन भी नहीं है। यह उनके पिता की आज्ञा है.

वे फैसले से बच जायेंगे. राष्ट्रीय निर्णय है. एक छोटा सा अवशेष है जो जीवन का अनुभव करता है।

परमेश्वर के वचन का प्रत्युत्तर जीवन और मृत्यु का मामला है। हमें बार-बार इसकी याद आती है। और हम इसे यरूशलेम और रेकाबियों के विपरीत देखते हैं।

ठीक है। परमेश्वर जो निर्णय सुनानेवाला है, उसे सुनो। उस वाक्य को सुनें जो वह उन पर 34 में चल रही इस विशेष संविदात्मक बात में उनकी बेवफाई के कारण लागू करता है।

श्लोक 17, लाइकान, इसलिए। यहोवा यों कहता है, तुम ने अपने अपने भाई और पड़ोसी को स्वतन्त्रता का प्रचार करके मेरी बात नहीं मानी। ठीक है।

उन्होंने रिहा हुए इन लोगों की आज़ादी छीन ली है. इसलिए प्रभु कहते हैं, देखो, मैं तुम्हें स्वतंत्रता की घोषणा करता हूँ। ठीक है।

हमारे यहाँ एक पुनरावृत्ति है, एक शब्द का खेल चल रहा है। तूने इन इब्रानी सेवकों की सामान्य स्वतंत्रता छीन ली। मैं तुम्हें आज़ादी देने जा रहा हूँ.

और इस आज़ादी में क्या-क्या शामिल है, यह देखिए। मैं तुम्हें तलवार, महामारी और अकाल से मरने की आज़ादी देने जा रहा हूँ, यहोवा की यह वाणी है। और मैं तुम्हें सारी धरती के राज्यों के लिए एक वेश्या बना दूँगा।

भविष्यवक्ताओं के सभी लेखों में इस बात पर जोर दिया गया है कि सजा अपराध के अनुरूप होनी चाहिए। आपने उनकी स्वतंत्रता छीन ली। मैं आपको स्वतंत्रता देने जा रहा हूँ, और यह कुछ बहुत ही भयानक तरीकों से मरने की स्वतंत्रता होगी।

इसका दूसरा पहलू यह है कि जब उन्होंने यह वाचा बनाई, तो उन्होंने प्राचीन निकट पूर्व में वाचा बनाने से जुड़े रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों का पालन किया, जिसमें जानवरों को काटना शामिल था। और ऐसा लगता है कि उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वे जानवरों को काटते थे। वे उन्हें बाहर रख देते थे।

यह उन बलिदानों और कार्यों का हिस्सा था जो उन्होंने ये अनुबंध बनाते समय किए थे। और वाचा के भागीदार जानवरों के अंगों के बीच चलेंगे। और यह पवित्र समारोह जो संकेत दे रहा है, वह यह है कि अनुबंध के भागीदार इस समझौते से खुद को बांध रहे थे और एक-दूसरे से कह रहे थे, अगर हम इस समझौते की शर्तों का पालन नहीं करते हैं, तो हमारे साथ भी वही हो सकता है जो हुआ है। ये जानवर जिन्हें हमने इस अनुष्ठान के हिस्से के रूप में चढ़ाया है।

हम इसे उत्पत्ति 15 में ईश्वर और इब्राहीम के बीच की वाचा में घटित होते हुए देखते हैं। जैसे ही ईश्वर जानवरों के अंगों से होकर गुजरता है, अब्राहम सो जाता है, और ईश्वर वाचा का पालन करने के लिए स्वयं को बाध्य करता है। उन्होंने परमेश्वर ने जो कहा था उसे करने के लिए स्वयं को बाध्य किया था। सबसे पहले, उनके पूर्वजों ने बाध्य किया था कि जब उन्होंने शुरुआत में मोज़ेक कानून प्राप्त किया था, तो उन्होंने खुद को फिर से प्रतिबद्ध किया है, उन्होंने एक वाचा बनाई है।

और इसलिए, भगवान जो कहते हैं वह यह है कि क्योंकि आपने उस वाचा का पालन नहीं किया है, सजा अपराध के अनुरूप होगी। और पद 18 में वह यह कहता है, कि जिन मनुष्यों ने मेरी वाचा का उल्लंघन किया, और जो वाचा अपने साम्हने बान्धी थी उसकी शर्तों को नहीं माना। मैं उन्हें उस बछड़े के समान बनाऊंगा जिसे वे दो भागों में काटते हैं और भागों के बीच में से निकालते हैं।

संपूर्ण राष्ट्र की अवज्ञा के कारण एक राष्ट्रीय निर्णय होने वाला है। और इसलिए, पैनल के अंत में, पहले पैनल के अंत में हमारे पास उन लोगों का राष्ट्रीय निर्णय है जिन्होंने अपनी वाचा का पालन नहीं किया। उन्होंने अपने पश्चाताप से पश्चाताप किया, और हमने रेकाबियों से जीवन का वादा किया है।

अब जैसे ही हम दूसरे पैनल के अंत में जाएंगे, हमें कुछ ऐसा ही देखने को मिलेगा। हम अध्याय 45 में जाते हैं, और यहां जीवन का वादा है जो दूसरे पैनल के अंत में दिया गया है। अध्याय 36 में, फिर से, इसकी शुरुआत में, वही स्थिति है।

यदि लोग आज्ञा मानेंगे, यदि वे सुनेंगे, यदि वे अपने पापपूर्ण मार्गों से फिरेंगे, तो परमेश्वर दया करेंगे और उन्हें जीवन देंगे। क्या वे ऐसा करने जा रहे हैं? और अध्याय 37 में, हिजकिय्याह, लोगों के प्रति उसकी उपस्थिति, उन्होंने प्रभु के वचन का पालन नहीं किया। यही कारण है कि यरूशलेम गिर गया, और यह पूरा पैनल और अधिक अवज्ञा का दस्तावेजीकरण करने जा रहा है।

लेकिन जीवन का वादा जो 36 में दिया गया है वह अध्याय 45 में एक व्यक्ति को दिया गया है। फिर से, अवशेष के आकार पर ध्यान दें। और अध्याय में, पहले पैनल में, यह एक छोटा सा अवशेष है।

यह एक छोटा कबीला है। यह एक अस्पष्ट समूह है और आपको यह विचार आता है कि यिर्मयाह को किसी को खोजने के लिए काफी लंबा और कठिन प्रयास करना पड़ा। दूसरे पैनल के अंत में, अवशेष में एक व्यक्ति शामिल है।

और प्रभु ने बारूक को यह वचन दिया। और याद रखें, बारूक यिर्मयाह का वफादार लेखक है। बारूक ही वह व्यक्ति है जिसने मंदिर में जाकर यिर्मयाह द्वारा लिखे गए शब्दों को पढ़ने का साहस किया था।

यह एक साहसी कार्य था। उसकी वफादारी के कारण, उसकी आज्ञाकारिता के कारण, इस तथ्य के कारण कि वह हर परिस्थिति में यिर्मयाह के साथ रहा, प्रभु उसे यह वचन देने जा रहा है। इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस प्रकार कहता है, अध्याय 45, पद 2। तूने कहा है, हे बारूक, हाय मुझ पर, क्योंकि यहोवा ने मेरे दुख में और दुख जोड़ दिया है।

और इसलिए, यिर्मयाह एक रोता हुआ भविष्यद्वक्ता था। बारूक एक रोता हुआ शास्त्री था। मेरा मतलब है, वे दोनों एक जैसी चीज़ों से गुज़रे।

मैं कराहते-कराहते थक गया हूँ और मुझे कोई आराम नहीं मिल रहा है। इसलिए तू उससे कहना, यहोवा यों कहता है, देख, जो मैंने बनाया था, उसे मैं तोड़ रहा हूँ। और जो मैंने लगाया था, उसे मैं उखाड़ रहा हूँ।

वह पूरा देश है। अध्याय 1 में यिर्मयाह के न्याय के मंत्रालय के बारे में बात करने के लिए कुछ मुख्य क्रियाएँ हैं जिनका परिचय हमें दिया गया है। प्रभु इसे पूरा कर रहे हैं।

लेकिन बारूक से वादा किया गया है। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, अपने लिए बड़ी चीज़ों की तलाश मत करो। उनकी तलाश मत करो, क्योंकि देखो, मैं सभी मनुष्यों पर विपत्ति ला रहा हूँ, लेकिन मैं तुम्हारे जीवन को उन सभी स्थानों पर युद्ध के पुरस्कार के रूप में दूँगा जहाँ तुम जाओगे।

इसलिए, बारूक, भले ही तुम मंदिर में जाओ और राजा तुमसे नफरत करे और तुम्हारा संदेश सुनना नहीं चाहे, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा और तुम्हारी रक्षा करूँगा। बारूक, जब योहानान और सेनापति तुझे और यिर्मयाह को पकड़कर मिस्र में ले जाएंगे, और तुझे इस परदेश में जाना होगा, तब मैं तेरे संग रहूँगा। बारूक, जब भी ये सभी अनुभव आपके और यिर्मयाह के साथ घटित हो रहे हों, चाहे कुछ भी हो, मैं आपसे यह वादा नहीं कर रहा हूँ कि आपको कठिनाई से नहीं गुजरना पड़ेगा।

अपने लिए महान चीज़ों की तलाश मत करो. और उस शब्द का उपयोग यिर्मयाह अध्याय 33 में भूमि की अंतिम बहाली के बारे में बात करने के लिए किया गया है। बारूक को इस प्रकार की आशीर्ष देखने के लिए जीवित रहने का अवसर नहीं मिलेगा, लेकिन परमेश्वर के प्रति उसकी वफादारी के कारण परमेश्वर उसे उसके जीवन से पुरस्कृत करेगा।

ध्यान दें कि वह क्या कहता है. मैं उन सभी स्थानों में युद्ध के पुरस्कार के रूप में तुम्हें अपना जीवन दूँगा जहाँ तुम जा सकते हो। मुझे विलियम हॉलिडे द्वारा उस छोटी सी अभिव्यक्ति को समझाने का तरीका पसंद आया।

उनका कहना है कि यह एक पुराने सैनिक का मजाक है। कि हम युद्ध में गए और हमें क्या लूट मिली? खैर, हमें जो एकमात्र लूट मिली वह यह कि हम अपनी जान बचाकर भाग निकले। और यही वह सब है जिसका वादा परमेश्वर बारूक से कर रहा है।

वह अपने जीवन के साथ बच जाएगा, लेकिन बारूक को जीवन का आशीर्वाद अनुभव होता है जो यिर्मयाह के मंत्रालय की शुरुआत में लोगों को दिया गया था, लेकिन उनके द्वारा अस्वीकार कर दिया गया था। परमेश्वर का वचन सुनना जीवन और मृत्यु का मामला है। बारूक इस तथ्य के कारण परमेश्वर के आशीर्वाद का अनुभव करेगा कि वह परमेश्वर का आज्ञाकारी रहा है।

यिर्मयाह अध्याय 44 में मिस्र में रहने वाले यहूदी शरणार्थियों की अवज्ञा के साथ वफ़ादारी और आज्ञाकारिता का वह कार्य सीधे तौर पर विपरीत है। और भविष्यवक्ता को याद रखें, हमने पहले इस अंश को देखा है, भविष्यवक्ता आता है और उनके मूर्तिपूजक तरीकों के बारे में उनसे सवाल करता है। उन्हें उन प्रथाओं को पीछे छोड़ने की ज़रूरत है।

उन्हें प्रभु के प्रति वफ़ादार रहने की ज़रूरत है। इस विदेशी माहौल में रहने के कारण, ऐसा लगता है कि वे इन दूसरे देवताओं का अनुसरण करने के लिए तैयार हो गए हैं। और वे यिर्मयाह से कहते हैं, जो वचन तूने प्रभु के नाम पर हमसे कहा है, हम तेरी बात नहीं मानेंगे।

हम अपनी मन्नतें पूरी करेंगे। हम स्वर्ग की रानी को भेंट चढ़ाएंगे। हम उसे अपना पेय चढ़ाएंगे।

हम आपकी बात नहीं सुनेंगे। और यह हमें 26 से 45 तक जो कुछ भी हमने देखा है, उसके अंत तक ले जाता है। हमेशा यह आरोप लगाया जाता है कि लोग परमेश्वर की बात नहीं सुनते।

उन्होंने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। खैर, इस के बिलकुल अंत में, वे स्पष्ट रूप से कहते हैं, हम प्रभु की बात नहीं सुनेंगे। दूसरे पैनल के अंत में अध्याय 44 और मिस्र में शरणार्थियों की इस राष्ट्रीय अवज्ञा की तुलना अध्याय 34 में यहूदा में रहने वाले लोगों की अवज्ञा से करना भी दिलचस्प है।

क्योंकि अध्याय 34 में जो कुछ है वह यह है कि लोग सही काम करने की शपथ से मुकर जाते हैं। यहाँ जो हो रहा है वह यह है कि लोग दृढ़ रहते हैं और अपनी इच्छा और अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने की प्रतिबद्धता व्यक्त करते हैं जिसमें कुछ ऐसा करना शामिल है जो गलत है। हम अपना बलिदान देते रहेंगे।

हम इन मूर्तिपूजक देवताओं को अपनी भेंट चढ़ाते रहेंगे क्योंकि हमारा मानना है कि वे हमें ऐसे तरीकों से आशीर्वाद दे सकते हैं जो प्रभु ने नहीं दिया। वास्तव में, एक राष्ट्र के रूप में हम पर जो विपत्ति आई है, वह योशियाह के सुधारों के परिणामस्वरूप आई है, जहाँ उसने हमसे वे चीज़ें छीन लीं। यहाँ उनके द्वारा कहे गए शब्दों के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया है।

और हम इस के अंत में आते हैं। बारूक का जीवन, लोगों का न्याय। यहोवा यह कहता है, मैंने अपने महान नाम की शपथ खाई है, मिस्र के यहोवा की यह वाणी है, कि यहोवा परमेश्वर के जीवन की शपथ, देख, मैं उन पर विपत्ति के लिए नज़र रख रहा हूँ, भलाई के लिए नहीं।

वे अपने रास से दूर नहीं हुए, इसलिए यहोवा उन पर विपत्ति लाने जा रहा है। मिस्र देश में रहने वाले यहूदा के सभी लोग तलवार और अकाल से तब तक नष्ट हो जाएँगे जब तक उनका अंत न हो जाए। और जो तलवार से बच जाएँगे वे मिस्र देश से यहूदा देश में लौट जाएँगे।

मिस्र की भूमि पर रहने के लिए आए कुछ और संख्या में बचे हुए लोगों में से सभी को पता चल जाएगा कि किसका वचन सही रहेगा, मेरा या उनका। इसलिए, मिस्र में उन लोगों का न्याय होने जा रहा है। वहाँ बचे हुए लोगों का न्याय होने जा रहा है और वे व्यावहारिक रूप से मिटा दिए जाएँगे।

उनमें से केवल एक छोटा सा अल्पसंख्यक ही देश में वापस आएगा। इसलिए फिर से, दूसरे पैनल के अंत में, बिल्कुल वही बात जो हमने पहले पैनल में देखी थी, लोगों के व्यापक न्याय के बाद एक छोटे से अवशेष का उद्धार होता है। यिर्मयाह ने लोगों को यह भी बताया कि इस्राएल के भविष्य की आशा बेबीलोन में निर्वासित लोगों के साथ है।

और याद रखें कि निर्वासन के बाद, हमारे पास ऐसे यहूदी हैं जो वास्तव में तीन अलग-अलग जगहों पर हैं। हमारे पास ऐसे यहूदी हैं जो यहूदा की भूमि में रहते हैं। हमारे पास अध्याय 43 में मिस्र गए यहूदी हैं, और फिर हमारे पास ऐसे यहूदी हैं जो बेबीलोन में हैं।

यहाँ हम उन तीन समूहों में से दो का न्याय देख रहे हैं। जो लोग देश में हैं, उनका न्याय 586 में शहर के विनाश से होता है। जो लोग मिस्र में हैं, वे लगभग पूरी तरह से नष्ट हो जाएँगे।

तो, यहाँ यिर्मयाह की कहानी में, हम वही देखते हैं जो यिर्मयाह ने कहा है: इस्राएल के भविष्य की आशा निर्वासितों पर टिकी है। हम कहानी के कार्यान्वयन में भी यही देखते हैं। लेकिन जो दो पैनल हमें दिए गए हैं, उनमें हमारे सामने यह विचार रखा गया है कि परमेश्वर के वचन को सुनना जीवन और मृत्यु का मामला है।

पूरा राष्ट्र न्याय का अनुभव करता है क्योंकि वे नहीं सुनते। वे परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते। एक छोटा सा अवशेष प्रतिक्रिया करता है और उसके परिणामस्वरूप जीवन का अनुभव करता है। हम परमेश्वर की कैसे सुनते हैं और हम भविष्यद्वक्ताओं के शब्दों को कैसे सुनते हैं, अंततः, उस समय के लोगों के लिए और आज हमारे लिए, यह जीवन और मृत्यु का मामला है।

यह सबसे महत्वपूर्ण निर्णय है, हम सभी के सामने सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है। परमेश्वर के वचन और उसके माध्यम से हमसे बात करने के तरीकों के प्रति आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

यह डॉ. गैरी येट्स द्वारा यिर्मयाह की पुस्तक पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 21 है, राष्ट्र के लिए मृत्यु और बचे हुए लोगों के लिए जीवन, यिर्मयाह 34-35।